२. डिनर

(पूरक पठन)

– *गजेंद्र रावत*

अगस्त की शुरुआत थी...

बारिश की तेज बौछारें होकर हटी थीं लेकिन अब वातावरण में किसी तरह की कोई सरसराहट नहीं बची थी । एकदम ठहरी हवा सीली और चिपचिपी हो गई थी। आसमान में काले-दूधिया बादलों में खामोश घमासान मचा हुआ था, मानो किसी चिकने फर्श पर फिसल रहे हों । लेकिन सड़क पर वाहनों की धक्कापेल से उठती बेसुरी ध्वनि ने वहाँ बिखरी कुदरत की नायाब चुप्पी को जबरन दबा दिया था ।

उर्मि के कंधे पर लंबी तनियों के दो बैग झूल रहे थे और एक बड़ा पोली बैग उसकी ठुड्डी तक पहुँच रहा था जो दोनों बाजुओं के बीच थमा हुआ था । बुरी तरह अस्त-पस्त थी वो, भीतर से एकदम तर-बतर । खीझ और झुँझलाहट के बावजूद उसकी आँखें उद्‌विग्न-सी सामने के सरपट दौड़ते ट्रैफिक पर लगी हुई थीं । वह ऑटो खोज रही थी । कभी कोई ऑटो दिखाई देता पर हाथ देने पर भी रुकता न था । जो रुकता वह रोहिणी जाने के नाम से ही बिदक जाता । वह बहुतों से पूछ चुकी थी । बार-बार ऑटोवालों की हिलती स्प्रिंगदार खिलौनों-सी मुंडियों ने उसे बुरी तरह चिढ़ा दिया था । इस 'न' की आशंका भर से उसकी दिल की धड़कनें तेज हो गईं । इस अविवेकपूर्ण अभ्यास ने उसकी टाँगों से मानो संचित ऊर्जा का रेशा-रेशा बाहर खींच लिया हो । वह लगभग पैरों को घसीट रही थी । उनमें कदम भर चलने की ताकत नहीं बची थी । जब चाहिए होते हैं तो एक भी नहीं दिखता और जब नहीं चाहिए तो चारों तरफ ऑटो-ही-ऑटो देख लो। इतना तो दिन भर के काम से नहीं थकी जितना कंबख्त ऑटो करने में टाँगें टूट गईं और देखो अभी तक हो भी नहीं पाया... वह सोच रही थी और बचती-बचाती सड़क पार कर पैदल ही चलने लगी । पैर घसीटते-घसीटते यही ऊहापोह पंचकुइयाँ के और अधिक व्यस्त चौराहे तक ले आई । अब नहीं चला जाता । बस ! वो फुटपाथ से लगी रेलिंग पर पीठ टिकाकर खड़ी हो गई । गहरी साँस भरते हुए उसने आसमान की ओर सिर उठाया और साँस छोड़ते हुए आँखें मूँद लीं मानो पल भर को विराम लिया हो । मगर थोड़ी देर में उसकी आँखें फिर सड़क पर लगी थीं ।

चारों ओर अच्छा-खासा अँधेरा घिर चुका था । सड़क के किनारे बिजली के खंभों पर बत्तियाँ टिमटिमाने लगी थीं जिनके इर्द-गिर्द बरसाती पतंगे जमा हो रहे थे ।

परिचय

जन्म : १९५८, पौड़ी (उत्तराखंड)
परिचय : गजेंद्र रावत जी हिंदी के एक चर्चित रचनाकार हैं । आपकी कहानियों में दैनिक अनुभवों के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं । आपकी कहानियाँ नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाती रहती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बारिश', 'ठंड और वह', 'धुंधा-धुंआँ तथा अन्य कहानियाँ' (कहानी संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संवादात्मक कहानी में रावत जी ने नारी के जीवन संघर्ष एवं उससे परिवार-समाज की अपेक्षाओं को दर्शाया है । पढ़ी-लिखी, नौकरी करने वाली बहू चाहिए पर साथ ही यह अपेक्षा भी रहती है कि घर के सारा काम भी वही करे । कहानीकार ने कहानी में यह स्पष्ट किया है कि घर के काम में हाथ बँटाने की जिम्मेदारी पुरुषों की भी उतनी ही है जितनी एक महिला की ।

वह फिर से हाथ का सामान उठाकर बिना समय गँवाए पीछे के ऑटो की तरफ चल दी ।

''चलोगे बाबा ?'' उर्मि हाँफती हुई बस इतना ही बोल पाई ।

''कहाँ ? वह काफी बूढ़ा था ।

''रोहिणी !'' उर्मि डरी-सहमी धीरे-से बोली ।

''बिलकुल चलेंगे पुत्तर...'' बूढ़े की आवाज में अपनापन था, जुबान मीठी थी ।

इतना सुनते ही वह झट से ऑटो में बैठ गई । बूढ़े की सहमति ने उसे दिली राहत दी । बूढ़ा अभी भी अगले पहिये पर झुका हुआ था और पाँव से दबाकर टायर देख रहा था । बूढ़े की पैंट का पोंचा घुटने तक गुल्टा हुआ था । उसके घुटने के थोड़ा नीचे रगड़ का निशान बना हुआ था । वैसे तो वह अच्छा-खासा लंबा था लेकिन उसकी कमर स्थायी तौर से झुकी थी । सिर के सन-से बाल बिना कंघी के फैले हुए थे । उसके चेहरे के गोरे रंग पर मैल, धूल और धुएँ की चिपचिपी परत चढ़ी हुई थी । उसने आँखें मिचमिचाते हुए पिछली सीट के छोटे-से अँधेरे में उसे देखा- वह बैठ चुकी थी । तीनों बैग सीट के पीछे रखकर वह हाथ में मोबाइल और छोटा-सा पर्स लिए चुपचाप बैठी थी ।

''चलो जी चलते हैं ।'' बूढ़ा मीटर गिराते हुए सीट पर बैठ गया और दोनों हाथ जोड़े पल भर आँखें मूँदे रहा । सुबह से नहीं मिला हाथ जोड़ने का टाइम ? वह बूढ़े के क्रियाकलाप देखते हुए सोचने लगी ।

''हाँ, तो पुत्तर कौन-से सेक्टर जाना है ?'' बूढ़े की जुबान में पंजाबी लहजा था ।

'' सेक्टर तेरह ।'' वो इत्मीनान से बोली अब पहले वाली खीझ, झुँझलाहट जाती रही थी ।

बूढ़ा बिना बोले चल पड़ा । ऑटो गति पकड़ने लगा ।

''पुत्तर एक बात पूछूँ ?'' बूढ़ा आगे सड़क पर दृष्टि गड़ाए झिझकते हुए धीमे-से बोला ।

''हाँ ?''

''ऐसा लगता है पुत्तर आप कहीं काम करती हो ?'' ''हाँ, अखबार में !'' उर्मि ने सिर पीछे टिका लिया था । ''अखबार में ? अखबार में कैसे ?'' बूढ़ा हैरान था । ''खबरें लाती हूँ...'' उर्मि कहते हुए लापरवाही से मुसकराई ।

''खबरें ?'' बूढ़े ने दोहराया, वह और ज्यादा हैरान था । काफी देर तक बूढ़ा चुप रहा, उर्मि की इस अजीब नौकरी के बारे में सोचता रहा । चलते-चलते अचानक एक अजीब-सी ध्वनि के साथ ऑटो बंद हो गया और धीरे-धीरे रुक गया ।

संभाषणीय

कामकाजी महिलाओं की समस्याओं की जानकारी इकट्ठा करके चर्चा कीजिए ।

‘‘ओ हो !’’ बूढे के मुँह से निकला, ‘‘क्या मुसीबत है ?’’ वह झुँझलाते हुए ऑटो को सड़क के किनारे तक खींच लाया ।

ऑटो के रुकते ही दस मिनट के अंदर ही उर्मि पसीने-पसीने हो गई । बूढ़े की बड़बड़ाहट उसके कानों तक पड़ रही थी । गरमी और घुटन से त्रस्त वह सामान ऑटो के भीतर ही छोड़कर नीचे बैठे बूढ़े के पास आ खड़ी हुई और थोड़ा-सा नीचे झुकते हुए बोली, ‘‘ठीक तो हो जाएगा न ?’’

‘‘हाँ, हाँ क्यों नहीं, चालीस साल से ऑटो चला रहा हूँ, पुर्जे-पुर्जे से वाकिफ हूँ । बस हो गया समझो !’’ भीतर लगी ग्रीस से उसका हाथ बुरी तरह सन गया था ।

‘‘आप इस उम्र में भी ... आपके बच्चे कमाते होंगे ?’’ वह आदतन पूछ बैठी लेकिन पल भर में ही उसे अहसास हुआ कि इतना निजी सवाल नहीं पूछना चाहिए था ।... पता नहीं कैसे तो गुजारा कर रहा होगा बेचारा !

बच्चों के नाम पर बूढ़े ने एक बार नजर उठाकर जरूर देखा और फिर सिर झुकाकर ऐसे काम में लग गया जैसे कुछ सुना ही न हो ।

‘‘बच्चे ! हाँ पुत्तर ...’’ बूढ़ा इतना ही बोल पाया कि उर्मि का मोबाइल बज उठा । वह फिर बोला, ‘‘आपका ...!’’

उर्मि चौंकी और मोबाइल को कान से सटाकर फुटपाथ पर चढ़ती हुई बात करने लगी, ‘‘आ रही हूँ बाबा ! हाँ भई हाँ ! शास्त्री नगर में हूँ...ऑटो खराब हो गया है.... नहीं-नहीं, वह ठीक कर रहा है ।’’ अंतिम शब्द उसने बहुत धीमे-से कहे ।

कुछ देर की आशा-निराशा के बाद ऑटो स्टार्ट हो ही गया । ऑटो को स्टार्ट होते देख उर्मि जल्दी से उछलकर पिछली सीट पर बैठ गई ।

कुछ देर ऑटो को ठीक-ठाक चलते देख, बूढ़ा बोलने लगा, ‘‘दो लड़के हैं, पहला तो शादी होते ही अलग हो गया, मैंने सोचा, चलो छोटेवाला तो साथ है पर वह तो और भी चालाक निकला, एक प्लॉट था उसके बिकते ही पट्ठे ने हमारा सामान बाँध दिया... मुझे ही पता है कि कैसे इज्जत बचाई ...’’ इतना कहते-कहते उसकी आँखें नम होती चली गईं । आवाज अवरुद्ध होती जा रही थी ।

‘‘तो अभी बिलकुल अकेले हो ?’’

‘‘हाँ पुत्तर, घरवाली को मरे चार साल हो गए हैं... बस बेटी है तुम्हारी उम्र की होगी, वो चक्कर लगा लेती है हफ्ते-पंद्रह दिन में । बेटी का मन नहीं मानता ! बेचारी वह भी अकेली कमाने वाली है । उसके आदमी के पास भी काम नहीं है ।’’ बूढ़ा धीमे-धीमे बोल रहा था और आखिरी शब्द तक बिलकुल ऊर्जाहीन हो चुका था मानो आगे नहीं बोल पाएगा ।

लेखनीय

‘बढ़ते हुए प्रदूषण (वायु, ध्वनि) का स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है,’ विषय पर अपने विचार लिखिए ।

कुछ देर वे चुप्पी में बँध गए ।

बूढ़ा फिर धीर-धीरे बोलने लगा, ''मैं किसी को दोष नहीं देता... सब किस्मत का खेल है ! दस साल का था मैं, जब लाहौर से दिल्ली आया था ... बाऊ जी ताँगा चलाते थे । यहाँ भी ताँगा ले लिया और जिंदगी भर वही चलाते रहे ।''...

यकायक एक तीखा-कर्कश स्वर गूँजा । ... खड़खड़-खड़खड़ ... और झटके के साथ ऑटो रुक गया ।

''ओफ्फ ओ ! अब क्या हुआ ?'' बूढ़ा झुँझलाया।

उर्मि ने कलाई को रोशनी तक ले जाकर टाइम देखा, फिर खीझ में धीरे-से फुसफुसाई, ''नो...ओ नो !'' बूढ़ा उतरकर ऑटो के इर्द-गिर्द घूमने लगा ''पंचर हो गया ... दस मिनट लगेंगे । आप फिकर न करें !''

फिर एक बार ऑटो पटरी के साथ खड़ा हो गया । बूढ़े ने आगे से प्लग-पाना, जैक और स्टेपनी निकाल ली, फिर बैठकर जैक लगाने लगा।

उर्मि ऑटो से उतर फुटपाथ पर चढ़ गई । उद्‌विग्न-सी, सिर नीचे किए छोटे-छोटे कदमों से टहलने लगी । अब टाइम ज्यादा हो गया है, ये गुस्सा कर रहे होंगे । बच्चे तो मेरे जिम्मे ही मानकर चलते हैं ... उसने सोचा ।

आकाश बादलों से पटा हुआ था । दूर कभी-कभी बिजली चमक जाती थी जिसकी तेज रोशनी आस-पास के घिरे अँधेरे में दिखाई दे रही थी।

अचानक मोबाइल बजने की आवाज ने उसे चौंका दिया । ये चिंता कर रहे होंगे ? उसने जल्दी से मोबाइल कान से लगा लिया ...''हैलो !''

''हैलो, क्या हो रहा है ? कहाँ हो यार ?''

वह ऑटो से थोड़ा दूर जाकर धीरे-से बोली, ''ऑटो पंक्चर हो गया है, ऑटो वाला बूढ़ा है, बेचारा धीरे-धीरे पहिया बदल रहा है ।''

''ऐसे खटारे में चढ़ी क्यों ? छोड़ो उसे, दूसरा ऑटो ले लो !''

''दूसरा मिलना मुश्किल है, बहुत कोशिशों से मिला है ये भी ।''

''अरे हाँ, तुम तो बूढ़े का साक्षात्कार ले रही होगी, वृद्‌धों के एकाकी जीवन पर लेख जो लिखना है ।''

''नहीं, नहीं...क्या बात कर रहे हो ।''

''नहीं, नहीं...क्या, ऐसा ऑटो ही क्यों किया... कभी तो दिमाग का इस्तेमाल किया करो''... वह उसी तरह झुकी हुई एक लंबी साँस खींचकर बिना हिले-डुले खड़ी रही । झिड़कते रहते हैं हर वक्त ! न जाने क्या समझते हैं अपने आपको ? मैं कोई जान-बूझकर ऐसा कर रही हूँ। इसे पचास रुपये दे देती हूँ... उसने पचास का एक नोट पर्स से निकालकर मुट्‌ठी में दबा लिया । अब वह सामने गुजरते ऑटो पर नजर रखे हुए थी ।

पठनीय

अपने परिवेश में यातायात सुरक्षा संबंधी लगे पोस्टर, भित्तिपट तथा विज्ञापन पढ़िए तथा कक्षा में लगाइए ।

‘‘टाइम लगेगा क्या बाबा ?’’

‘‘नहीं, पुत्तर बस हो गया !’’बूढ़ा पहिये के नट कस रहा था ।

‘‘तुम्हारा बच्चा छोटा है क्या ?’’बूढ़ा दोनों घुटनों पर हाथ रखकर खड़े होते हुए बोला ।

वह बूढ़े के इस असंगत प्रश्न से हैरान थी लेकिन उसने धीमे-से स्वीकृति में सिर हिला दिया । असंगत प्रश्न होने के बावजूद उसे अपने पापा की याद आ गई । उन्होंने बड़े किए हैं मेरे दोनों बच्चे...।

बूढ़ा ऑटो की तकनीक पर बड़ी देर तक बड़बड़ाता रहा ।

वह बिना कुछ कहे बैठ गई । ऑटो फिर से दौड़ते ट्रैफिक में शामिल हो गया । ऑटो जब सिग्नल पर रुका तो उर्मि ने कलाई की घड़ी को फिर देखा और सिर्फ होंठों को हिलाते हुए फुसफुसाई ... ‘एक महाभारत अभी घर पर भी झेलनी है... क्या पकाना है ? ओफ हो ! लेबर-सी जिंदगी हो गई है ! दिन भर रिपोर्टिंग के लिए धक्के खाओ... घर पहुँचो तो.... डिनर बनाओ !’

आगे की ड्राइविंग सीट पर बूढ़ा भी लगातार बड़बड़ा रहा था जो ट्रैफिक के भारी शोर में स्पष्ट नहीं था। उर्मि का मन घर पर ही लगा था ... अनुराग मुझसे तो इतनी पूछताछ कर रहे हैं कि कहाँ हूँ, पर ये नहीं कि सब्जी ही काट दें, दाल धोकर गैस पर चढ़ा दें । दिन भर आराम ही तो किया है । सुबह तो खाना मैं ही बनाकर आती हूँ । ... लेकिन मेरी किस्मत कहाँ ! ये सब तो मेरे इंतजार में होंगे ! आएगी और करेगी ....और क्या ? दुनिया में सिर्फ औरत को न तो कभी थकान होती, न दुख, न तकलीफ ! सारे काम औरत के जिम्मे हैं... आदमी तो फिर आदमी है ! ये सारे खयाल करते-करते उसके मुँह से हल्की-सी आह निकल आई ।

‘‘मुड़ना किधर है ?’’ बूढ़ा तेजी से बोला ।

वह चौंकी और फिर बाहर देखती हुई बोली, ‘‘सीधे हाथ... अगले गेट से अंदर ले लेना ।’’

ऑटो बिल्डिंग के नीचे रुक गया । बूढ़े को पैसे देकर वह सामान को पहले की तरह समेटे भारी कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते सोचने लगी... ‘दस से ऊपर का टाइम हो गया है, तीन भूखे प्राणी घर में विचरण कर रहे होंगे... उनके लिए, अपने लिए खाना बनाना ! क्या मुसीबत है ! सुबह फिर प्रेस कॉन्फ्रेंस और दफ्तर ! कैसे होगा ये सब ! क्या उनके बस का कुछ भी नहीं है ? मैं भी तो जॉब करती हूँ। ये तो तीन महीने से घर पर ही हैं... मेहनत तो मेरे काम में ही ज्यादा है ।’ वह दरवाजे तक पहुँच गई और बेल दबाकर दीवार से सिर टिकाकर खड़ी हो गई ।

दरवाजा खुला । वे तीनों एक साथ ही उदास चेहरे लिए दरवाजे पर खड़े थे । छोटा दौड़कर उससे लिपट गया ‘‘मम्मा भूख लगी है !’’

आजकल ‘वृद्धों का जीवन कष्टमय होता जा रहा है’, किसी वृद्ध से मुलाकात करके उनसे इस विषय में सुनिए ।

'उसके तन-बदन में जैसे आग लग गई हो । कम-से-कम बच्चों को कुछ खाने को दे सकते थे' ... उसने सोचा लेकिन धीरे से बुदबुदाई, ''अरे भीतर तो आने दे !''

अनुराग सिर नीचे किए हुए बोला, ''बहुत लेट हो गई हो, ऐसा भी क्या ऑटो था ?''

उर्मि ने कुछ न कहा, एक नजर रसोई की ओर देखा । एकदम साफ-सुथरी । 'दिन में कामवाली करके गई होगी तब से किचन में घुसे तक नहीं । इन्होंने सब्जी तक नहीं काटी । हर तरफ मुझे ही मरना है ।' वह भीतर-ही-भीतर सोचती रही । बेडरूम की तरफ जाते हुए विपरीत दिशा में हाथ से इशारा करते हुए बोली, ''वहाँ अँधेरा क्यों किया है ?''

''हम सब बेडरूम में ही थे । सीरियल देख रहे थे इसलिए वहाँ क्या फायदा बेकार में लाइट ...'' अनुराग के साथ खड़ी बेटी शैफी ने कहा ।

''चलो ठीक है, मैं हाथ-मुँह धोकर खाना पकाती हूँ ।'' वह तल्ख होकर बोली । ... 'सीरियल देख रहे हैं... बताओ ।'

वे सब वहीं खड़े उसे हाथ-मुँह धोते चुपचाप देखते रहे ।

उर्मि रसोई की तरफ मुड़ गई । ऐप्रन पहनकर फ्रिज से सब्जियाँ निकालकर स्लैब पर रखते हुए खीझ से बोली, ''चाकू कहाँ है ?''

''डायनिंग टेबल पर होगा ।'' बेडरूम से अनुराग की आवाज थी । इनसे छोटी-छोटी मदद की भी उम्मीद नहीं की जा सकती ... वह झल्लाहट में पैर पटकती डायनिंग टेबल तक पहुँची । '...यहाँ कहाँ रख दिया अँधेरे में ! कोई चीज जगह पर नहीं मिलती ।' वह बड़बड़ाई और दीवार तक पहुँचकर लाइट का बटन दबा दिया । रोशनी होते ही उसने टेबल पर देखा तो भौचक्की रह गई । वहाँ खाना बना रखा हुआ था । डोंगा, सब्जी और केसरोल ! उसने जल्दी से डोंगे का ढक्कन हटाया और देखकर ढक दिया ।

इस सीन को लाइव देखने के लिए वे तीनों बेडरूम से निकलकर डायनिंग टेबल के पास इकट्ठा हो गए ।

उन्हें पास देखकर उर्मि बुरी तरह झेंप गई । हथेलियों से मुँह छिपाती वहीं दुबककर बैठ गई ।

वे तीनों जोर-जोर से हँसते ताली बजाते उसे घेरकर खड़े हो गए । छोटा, मौका देखकर माँ से चिपक गया और तुतलाता हुआ बोला, ''मम्मा हमने बना दिया'' इतनी रात हँसी की आवाज दूर तक जाती रही ।

'मैं भी क्या-क्या सोचती रहती हूँ', उसने इन्हीं ठहाकों के बीच फिर सोचा । शर्म से उसके गालों पर लालिमा फैल गई ।

('लकीर' कहानी संग्रह से)

— ० —

शब्द संसार

वाकिफ वि.(अ.) = परिचित, ज्ञात
तल्ख वि.(फा.) = कड़ुवा, कटु
डोंगा पुं.सं.(दे.) = बड़ा कटोरा

मुहावरे

बिदक जाना = भड़क जाना, चौंकना
पसीना-पसीना हो जाना = बहुत श्रम करना, थक जाना
भौचक्का रह जाना = आश्चर्यचकित होना
झेंप जाना = लज्जित होना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

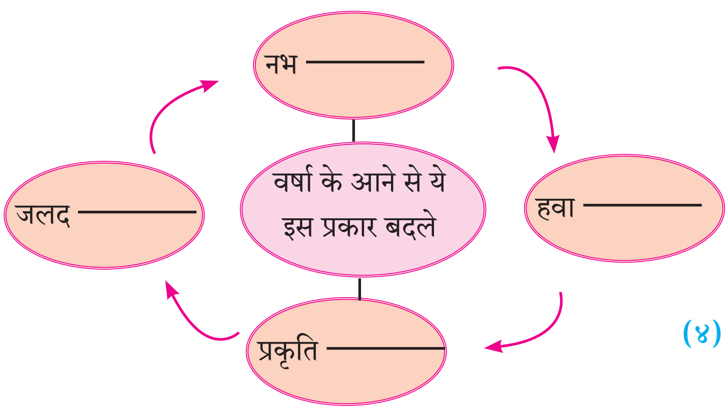

(२) ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

१. गरमी और घुटन
२. सड़क
३. नौकरी
४. शास्त्री नगर

(३) उत्तर लिखिए :

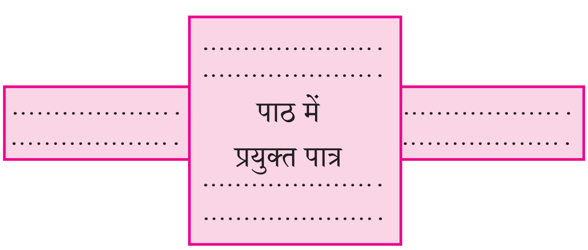

(४) उत्तर लिखिए :

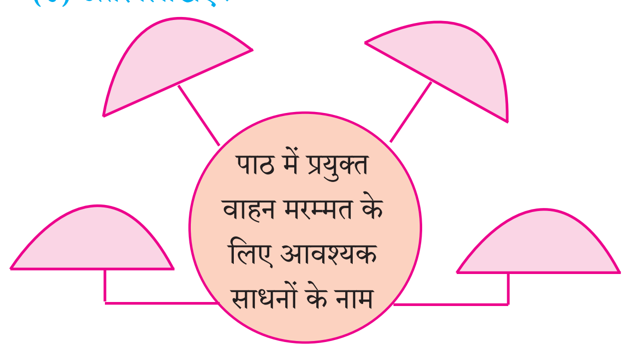

(५) निम्नलिखित कथनों में से केवल सत्य कथन छाँटकर पुनः लिखिए :

१. ऑटो के रुकने से उर्मि खुश थी ।
२. आगे की ड्राइविंग सीट पर युवती थी, लगातार बड़बड़ा रही थी ।
३. उर्मि उतरकर ऑटो के इर्द-गिर्द घूमने लगी ।
४. रोशनी होते ही उर्मि ने टेबल देखा तो वह क्रोधित हो गई ।

(६) शब्दयुग्म पूर्ण कीजिए :

१. ——— - दूधिया
२. डरी - ———
३. ——— - गिर्द
४. हाथ - ———

अभिव्यक्ति **'घर के कामों में प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है', इसपर अपने विचार लिखिए ।**

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. हाँ तो पुत्तर कौन-से सेक्टर जाना है बूढ़े की जुबान में पंजाबी लहजा था
२. रोहिणी उर्मि डरी-सहमी धीरे-से बोली
३. ऐसा लगता है पुत्तर आप कहीं काम करती हो
४. मैं भी क्या-क्या सोचती रहती हूँ उसने इन्हीं ठहाकों के बीच फिर सोचा
५. उसने सोचा लेकिन धीरे से बुदबुदाई अरे भीतर तो आने दो
६. जी हाँ जी हाँ बहुत प्यारा बच्चा है मेरे मित्र ने कहा
७. संदर्भ लकीर कहानी संग्रह से
८. तुम बोलती क्यों नहीं अंबिका आक्रोश की दृष्टि से उसे देखती है
९. मल्लिका क्षण भर चुपचाप उसकी तरफ देखती रहती है क्या हुआ है माँ
१०. पचासों कहानियाँ पढ़ जाऊँ तो कही एकाध नाम मिलता है नहीं तो लोग यह वह से काम चला लेते हैं

(२) निम्नलिखित विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए लगभग १० वाक्यों का परिच्छेद लिखिए :

विरामचिह्न युक्त परिच्छेद
। - ? ; , ! ‘ ’ “ ” × × × —— ० —— .... ( ) { } [ ] ^ : -

उपयोजित लेखन

मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

घना जंगल —— विशाल और घने वृक्षों पर पंछियों का बसेरा —— रोज पंछियों का बच्चों के लिए दाना चुगने उड़ जाना —— हर बार जाते समय बच्चों को समझाना —— ‘फँसना नहीं, बहेलिया आएगा, जाल बिछाएगा’ बच्चों द्‌वारा इसे केवल रटना —— रटते-रटते एक दिन पेड़ से नीचे उतरना —— दाने देखकर खुश होना —— माँ की सीख याद आना —— चौकन्ना होना —— सावधान होकर उड़ जाना —— बहेलिए का पछताना —— शीर्षक ।

768GJY